प्रथम अध्याय
बालसाहित्य : बालगीत साहित्य :
अवधारणा एवं स्वरूप
प्रक्ष अध्याय

बालसाहित्य : बालगीत साहित्य : उदाहरण एवं स्वयं - विद्येयन

खण्ड "क" - बाल साहित्य - एक प्राचीन

1.1 आमूँक

"बालक तुम्हारे परावर्त रत रत जन्त है,
बालक बालबन्धी का परावर्त रंग दें है,
बालक परमहृद् रिश्त, दूरदूर, सत्य है,
बालक तरंग मन, स्वयं साहित्य है। 1

बच्चों के संबंध में हिन्दी बालसाहित्य के प्रतिद न दैवत की दर्शनाला रात्रि बालकों का जल किताब है। परंपरा-स्वयं बच्चन परिवार के सबे महत्वपूर्ण दिन है। इसी कारण एक उर्दू शायर ने कहा - "मेरे बच्चों का एक वर्ष ले लो, बच्चों में वचन का एक दिन वे दो।" 2

मानवता और देश का भक्ति आशा एवं बालकों पर निर्भर रहता है। पौंछ जयानंदलाल ने यह कहा है - "मूंछे जब हिंदुस्तान का भक्ति देखने की इच्छा होती है तो बच्चों की आवश्यकता और विदेह की खोज करता है। बच्चों के भाव मूंछे भारत की भाव के जाते हैं।" 3 इस का उज्ज्वल भक्ति यह आज के नन्दे-मुनि ओर निर्भर है तो हमारा यह गोरखपूर्ण वाक्य प्रकट है कि हम अपने बच्चों के संघ में रिश्ता के लिए, उनकी स्वतंत्र एवं मानविक-सौदिक आधारकला के अंतर्गत स्वयं स्वतंत्र गोरखपूर्ण साहित्य उन्हें प्रसार करें।

1. दरिका ग्रंधाद मातृकारी - "राष्ट्रीय तत्तारा" जीवनपरिचय, बृत्स्वतिय, 19 नवम्बर 1992
2. "बालका" रुस्यिक, नवम्बर 1994, पृ. 72
3. "हिन्दी बालकाव्य : एक अभिराम यात्रा" -पिन्योद्वर्द पादेय पिन्योद-प्राक्संभा है उद्देश्य ।
अत्यधिक अंशों के लिए निम्न लिखित रूप से कोई सामाजिक-सूक्ष्म नहीं दर्ज किया था। इसलिए बच्चों को व्यक्ति का सामाजिक रूप में रखना जरूरी था जिससे वह अपनी व्यक्ति और मनोरंजन के अनुकूल अंश में अपने सामाजिक रूप में विकसित हो सके।

“रोमनीतन कृतियों”、“मानव की कथा"” आदि कुछ कृतियों बच्चों के लिए लिखी गयी थीं लेकिन बच्चों के लिए अस्थायी पतल परिवर्तन का अस्तित्व बच्चों के रूप में स्वाभाविक रूप से नहीं हो सकता था।


बालसाहित्य क्यों इस प्रकार लिखे गए एवं जिसका मुख्य आरण्य ग्राम यह ठिक है कि मानवीय वास्तव में अपने त्वरितत्व के अनुसार व्यक्तित्व अपरिमाण माना जाता था। मोनेड्रेजन ने यह बताया है—

"बच्चों का न कोई मानसिक व्यक्ति है। न परिधान सार्वजनिक आकार।" 1 ऐसे "मानविकत्वकृतियों" मानवों की जीवन-वात सामाजिक-सूक्ष्म रूप में 2 स्वाभाविक के सामाजिक अंश के पहले, बच्चों की मानसिकता और तात्त्विकता के अनुसार, मनोरंजन सामाजिक करणे अत्याधुनिक और महत्वपूर्ण समझी जाती थी। लेकिन अंग्रेजी में भाषा विद्या के विकास के प्रभाव पर यह धारणा समझते हैं कि,

"बच्चों की विद्यालय अधिकारियों" ने पूर्व त्वरितत्व "व्यक्ति" है। 2 इसलिए, वह सफल है कि उनके मानसिक और वैदिक आदर्शों के अनुसार जनानुमान स्वतंत्र जनानुमान घाटक और अत्यधिक सामाजिक मानविकी के विकास का परिप्रेक्ष्य है।

1. "Children were regarded as infer human, for Montaigne, 'they had neither mental activities, nor recognizable body shape'.

The World Encyclopedia - Vol. III

2. 'Children were considered with unique rights'—Biblic usage. 2 Children and their literature'—Constantine Georgion
10 वालक और उसकी दुनिया । बालमनोपििनाँ दुनिया

बच्चों का स्वभाव अत्यंत बिचल दिखाता है। उसकी दुनिया भी बच्चों की
दुनिया से अधिक निराली है। बच्चों की दुनिया में असंगत और निरक्षर लगने-
वाली बातें बच्चों को युक्तिसमग्र और रसपूर्ण लगती हैं। अब बच्चों के लिए
महत्वपूर्ण लगेवाली बातें बच्चों की दुनिया में बिलकुल निरक्षर लगती हैं। अतः
पिताभिन्न ध्वनि और जीवन-वातावरणों के अनुसार बच्चों में होने वाले परिवर्तनों के
प्रयोग से ज्ञात करने के अवसर, बालसाहित्य कलाने योग्य नहीं
है।

हिंदी बालसाहित्य के प्रतिकृत कवि और लेखक श्री निरंजन देव ने
बालमनोपििनाँ अपने शरीरात्मक गृह में विभेद और बालमनोपििनाँ का विश्लेषण
विषय किया है। उस गृह में आप ने यह बताया --- "बालस्वभाव का
प्रयोग से ज्ञात करने के अवसर, बालमनोपििनाँ लिखा ही नहीं जा
तकता। जो बढ़ लगता है जब कि बच्चों के मन में किन परिस्थितियों में
चित्र प्रकाश की भावनायें उठती हैं। कब, कैसी कल्याणों बदल करते हैं, यह
स्थायी अपनी भावनायें और कल्याणों के आधार पर बालमनोपििनाँ रच लेते हैं,
पर बच्चे भी उसमें रस ले लेते हैं, यह कहना कठिन है।" । इसलिए बालसाहित्य
और बालमनोपििनाँ के अध्ययन के भीतर बालमनोपििनाँ का एक संक्षिप्त अध्ययन
बहुत आवश्यक होगा।

कुछ मनोवैज्ञानिकों ने बालसाहित्य की विभेदन अवस्थाओं को जैसे, कवि, कवि,
किशोरावस्था आदि नाम दिये हैं, और इस विभेदन के अनुसार बालसाहित्य में
भी यह विभेदक बालसाहित्य, किशोर साहित्य आदि वर्गीकरण है। लेकिन
इन विभेदन अवस्थाओं की विभेदकाएँ पर लोक्यर करने से पहले यह देखना
आवश्यक होगा कि बालक कौन है। किस अम तक कविता का विष्ठार है? ।
10 निरंजन देव ने "बालमनोपििनाँ: इतिहास एवं साहित्य" पृ. 2
तामाम भाषा मात्र और पौधके बीच की अस्थाय और उम्मीद वृक्ष की अवस्था को उम्मीद देने मानते हैं। ज्ञान जो ऋषिद नहीं हुआ है, वह बालक है। कोष्ठकार ने कहा है —
"जिस अवस्था से लेकर एक बच्चा खुद के साथ एक तपस्वी पुस्तक का आस्थाय लगाता है, या ऊंची स्मृति में पड़े। प्राणों ने कहा पर ध्यान देने में क्षमा की जाता है, तब तेरा बाल-प्रकट कल्यण की आयु तक के सभी
सार्थक पाठक वर्ण के बालक कहलाते हैं।"  

"हिंदी के पुस्तिय साहित्यिक लेखक श्री बालमुकुंद गुप्त का अभिप्रेय है —
"जोते तार पर पाँच से प्रातः-तृषू ताल तक के बच्चे बालक की आयु में रखे जाते हैं। बारस-तृषू के बाद बच्चे किशोर वय में प्रस्थाय लगाते हैं। ध्यान
साथ से कम उम्र के, पृथ्व अग्नि जाते हैं। इसलिए, साहित्यिक का मतलब अस्माय,
यह साहित्य जो पाँच से तेरह साल तक के बच्चे के लाभ हो।"  

हिंदी के पुस्तिय बालगतिकार निरंजन देव लेखक की ने तीन तेरह बारस-तृषू तक की अस्थाय को बच्चे भाषा है। आपके ताल में 12 तेरह आयु के
बच्चों के पाँच तेरह तक के लिए स्मृति विश्वास भी दी गई है। आपके निरंजन देव
बालसाहित्य तक के बच्चे को बालक मानते हैं।

अब इसे देखना है कि ईश्वर की इस पहर-सूरत स्वर्ण सिद्धी और बालक
की खूबियाँ क्या क्या है?

1."All potential or actual young literates, from the instant
they can with joy, leaf through a picture book or listen
to a story read aloud, to the age of perhaps 14 or 15 may
be called children." Encyclopaedia Britannica Vol. 23

2. नवभारत टाइम्स - जुलाई 12, 1993
3. Shri. निरंजन देव लेखक "बालगति साहित्य-युग लागू" पृ. 6
बच्चों के समान उतना कोमल एवं आकर्षक और कोई तूफ़ नहीं है । बच्चों
की पाँच इन्द्रियों सदा जागरूक, सत्यपूर्वक तीव्र धिमास की और अग्नि है ।
बच्चों का मन अनेक पूर्व-धाराओं से भरा हुआ है । लेकिन शिशु केलिश यह
dुनिया पिर-पूर्व है । जिजाता तथा कौटुंबिक बालमान के मुख्य भाव हैं । अपने
चारों और की यस्तुओं के रहस्य जानने की तीव्र इच्छा में वह एक मूर्शास्व तथा
भूतित अभ्यास का पतझड़ बनने की स्थिति में उसका-कुवता हुआ दृष्टा-फिरता
है । माँ की गौड़ी में उत्तरक वाटी में केलना, पानी में नदाना, बेल-बूद करना,
पेड़-पाँचों से दोहरी करना उत्कृष्ट सबूत है । प्रस्तुति के लर्धदाता से जलदी कहे
तारादाम्य स्थायित्व कर लेता है । प्रशि के ध्वनि, लघु और संगीत के उसका
जन्मवत आकर्षण है । व्यक्ति तेलवादें के कथनोतर अबम , भी उस निःश्री
हीन इच्छा-स्वभाव के स्वतंत्र है ।

स्तुतियों के मात्र दर्शन से बच्चा तूफ़ नहीं टोलता, बल्कि उसका स्पर्श कर
उसे रोक -परबकर अपनी जिजाता-पूर्वता कर बैठता है । उसकी जागरूक धीरों के
कारण वह नया-नया परस्पर करता है । यह विश्वास है । वह धीर । वह क़ैसे । कौई
“डॉर” या “टेल-मटोल” से बात झोंकने को वह तैयार नहीं । अपनी खेली
शंकाओं का समाधान वह चाहता है । अबलौट नेस्तन उसे हैं—चार

वर्ष की अवस्था में पूराने का स्वभाव अपनी चरम सीमा पर पूर्ण जाता
है । बलक की यह शिशु की दूसरत में जाति । धीर, खेल या वर्तन की सीमावरि
निरस्त है, जो वर्षों की दूसरत में महत्वपूर्ण है । शिशु का स्वभाव ऐसा है कि
ने उसके प्रभुभाव रक्षा है, वह क़ौई भी ही, उत्कृष्ट आत्मीय है । अतः
शिशु और बलक का प्रक्ष साधनात्मक है ।

18 २. अर्थात्- सन्तर तक देखो—‘हिन्दी वालसाधित्य एक अध्यात्म पृ. ६ से उद्धृत

2१ “Questioning is at a peak at four” --Arnold Gessel —
"The first five years of life."  प. ४९
विकास की इस शरीरीक अवस्था में भाषानिर्माण वेजटाइम, रक्तवर्क आदि में बच्चा असीम रस पाता है। यह मस्त होकर त्वचा बेलता है। इस अवस्था में बच्चे को स्नेह नहीं पर अन्नन्द है। तालमेय ध्वनियों और शब्दों का विकाश पर अधिक भावात्मक प्रभाव पड़ता है। विश्लेषण का नत है कि नौ महीनों वर्ष के गर्भ में, उन्हें तालमेय दृष्टि-स्थन तुलने के बाद, जन्म के पर उन ध्वनियों के स्पर्श माता के गर्भ में विलाय उन कु छ पूर्ण दिनों की याद आती है जो उसे प्रत्ययिक तुलक और आदर्शात्मक प्रदान करने का काफ़ी अनुभव होता है। अतः शीघ्र ध्वनियाँ शब्दों, गीतों और आभास गीतों को बच्चे उद्देश्य प्रस्तुत करते हैं। लेखिका और अंबांब शिष्य गीतों में उसे असीम अनन्द मिलता है। "शब्दों और ध्वनियों के गर्भ में उसे सहज रूप में भाषाज्ञान भी प्राप्त होता है।" 2

परंतु ताल में पूर्व की अवस्था इसकी महत्वपूर्ण है कि व्यक्तित्व की नींव इसी तस्वीर रखी जाती है, जिसम अंदे बुनियादी परिवर्तन फिर से अग्र नहीं है। इतना प्रयाद ने कहा है - "नामस्य का प्रयोग में जो कुछ बना दिया होता है, वह पांच साल तक की आयु में बन चुकता है।" 3

1. One suggestion has been that because the baby has just spent nine months, listening to the rhythm of the heart beat, any sound with the same rhythmic qualities will be a kind of reminder of the soothing atmosphere of the womb. Helen Bee - "The Developing Child" P. 31

2. "The child's natural way of learning the language is psychologically sound." Ruth Strang - "An Introduction to Child study." P. 103

3. "वास्तविक साधना - शास्त्रीय साहित्य - इतिहास व्यंजन समीक्षा" पृ. 53
पेट-पौधों, बिल्ली, गाय आदि पालने वालों और अन्य सुपरिचित वस्तुओं
ते बच्चा इस अवस्था में सख्य रहता है, उनसे बातें करता है । मनोवानम के लेखक
प्रभुद्वार राजराज भार्ते के शब्दों में “गियु एक अद्भुत हृदिका विपूर्ण करनेवाला
ि। उसमें भावों की कोई सिखारा नहीं, भूल या चिंता भाव बदलते रहते हैं।
क्षण टोलने पर भी उसकी संकल्पनायें आकाश तक उड़ी होती है। “उदासी” का
भाव उसे फूल की नहीं। यह गोष्ठा तकिया है, आत्म केन्द्रित है, तब कुछ अपनाना
चाहता है।” ।

तर्कबुद्धि का दोनों के कारण बालक निर्देशक कल्पना का आश्रय लेता है। वह
कल्पना में हाथी के ऊपर सवारी करता है, कभी इकड़वर बनता है, तफ़्फ़ा बनता
ि, फिर अभिनेता बनता है, अध्यापक बनता है। नन्ही बच्ची माँ की ताक़ी
पत्नकर माँ का अनुकरण करती है। इस प्रकार वह अपने ज्ञान की गर्दी को कल्पना
के तहत पूरा कर लेता है। उसकी दृष्टि में घायल और अभावों में अन्तर नहीं
उतकोणों तबहुए वधार्य की दीखते हैं।

ध्यानि, लय, सङ्गीत, अभिय आदि के प्रति आकर्षण के कारण बेलको पद, शिशु-
गीत, वोल्वमन्त्र, रामभा, अविष्कार गीत आदि इस अवस्था में अतिक रिख्यात है ।
विज्ञ-पुस्तकें, सुपरिचित परिपुर्ण की कथाएँ, पृथ्वीवाद, लोक कथाएँ आदि भी उन्हें
पतल देते है। मनोनीताकर उद्धरण है कि “बच्चा दोई-तीन वर्ष की अवस्था में
अपनी परिस्थितियों में प्रश्नक ध्वनि भोज भृगुविद्य उमन करने लगता है। यहें से उसके
मन की प्रृयुतियों का नियंत्रण धोने लगता है और तात्पर्य-तः सार की अवस्था
तक उसकी मूल प्रृयुतियाँ निविवेकित हो जाती है।” । । यह स्लू-पूर्ण की अवस्था है।

1. बालतात्त्विक : तत्त्व और इतिहास - राज्य बालतात्त्विक संस्था पृ. 109
2. बालतात्त्विक : इतिहासाद्धी राज्यीय मुक्त विश्वविद्यालय मानकी

पियामधे -अप्रैल 93 पृ. 21
पाँच से लात आठ अवसर तक की दूसरी अवस्था में वाली मे विधारों का दृष्टि
अधिक अपार की जाता है। कौन भी ऐसे विधारों के आरोपी बीमार है?
अधिकांश स्त्री की इस अवस्था में वह दूसरी अवस्था-वेनिच अवस्था
दे बाहर निकालने अधिक स्वाभाविक होते प्रकट हैं। विलय, परिवार,
खिलौनों और पालन मान्यताओं की तंतुंखन हुनिःपा से रहे उत्साह, उनमें की
एक दुनिया में आता है। नई-नई घटनाओं देखने का कोई उम्मेद की जाती है।
वह प्रेमसंग के साथ-साथ आता अधिक मनमोहक करता है। अब तक केवल-लक्षणों
मध्यें फसल-फसल रहने रोशनी की कड़मों धारा चढ़ाता है। मूलबुझ की मूल
प्र्रत्युस्तियाँ उत्तरा अब तुझे देने लगाते हैं।

प्रेमानन्दों के अनुसार वाल्लिकाबुझ की मूल प्रयूस्तियाँ निम्न लिखित हैं।

1. विलास
2. छपालमका प्रयूस्ति
3. निलेश्वर
4. लंध की प्रयूस्ति
5. अन्य प्रवर्तक के प्रयूस्ति
6. जनवरण की प्रयूस्ति
7. सत्यता
8. स्वामिन्द्र
9. चिन्ता की प्रयूस्ति
10. श्रवण की प्रयूस्ति
11. विलास की प्रयूस्ति।

1. डा. गुफ्ता भोजपाल - "विंदी बालकाथा में प्रयूस्ति की कल्पना-
तह" पृ. 110
पियभत्र जीवन-परिस्थितियों के अनुसार बाल्यावस्था में इन प्रृतितियों का निवारण होता है। स्पर्धा का भाव भी बढ़ने लगता है।

आठ-नव वर्ष से अगला वर्ष तक की अवस्था में बालक अपने की समाज का अंग गाने लगता है। दूसरे देशों एवं भौगोलिक विकासों के बारे में जानने की उद्योगता बढ़ती है। काल्पनिक कहानियों से बचकर ठोस जीवन-कहानियों पढ़ना चाहता है। राजनीतिक, शासनिक, विज्ञान, वाणिज्य, वाणिज्य विधान, जीवन-तात्त्विक आदि सभी विधानों में रचना बढ़ती है। कहानियों में तत्पंक्त और संगीत भी चाहता है। तमू-गान, प्रयास गीत आदि में रचना बढ़ता है। नायक-पूजा की भावना बढ़ जाती है। वीरता-पूर्व गीत उसे आकृति करता है। कुछ विषय इस अवस्था की पूर्ण-किशोरीवापस्या मानते हैं।

ग्यारह-बारह वर्ष से लेकर बाँट-पंचक से जितने वर्ष की आयु तक की अवस्था की विश्वास-वापस्या कहलाती है। मलयालम के प्रभात के केंद्र यात्रा के गत में "लें कुछ जानने की अभ्यस्य दिशा हम अवस्था को तबत स्थानी बढ़ती है।" तेजहर विचारिताओं और रोगियों के अलक्ष इस अर्थ में बालक पूर्ण में और समाज में अपनी अभिलाषा बनाये रखने का प्रकाश करता है। उस पूर्ण स्वास्थ्य चाहता है। इत स्वतंत्रता चाहता है। इस अवस्था में उसे जो साधनिक दिया जाता है, वह विश्वास-प्रधान और भाव-प्रधान दोनों प्रकार का होता चाहिए।

किशोरावस्था में बच्चों का भावनात्मक अधिक विकसित हो जाता है। "उनकी कल्याण की उढ़ेदार स्थायी ऊँची और लंबी होने लगती है। अब उन्हें तात्त्विक, विश्व-तात्त्विक की कहानी-कथिताओं में जगा नहीं भाटत। उनकी मानविक भूमि का रूप बदल जाता है। साहित्य-कार्याएँ, अन्य अंतर्निहित और रोमांचक घटनायें।

कृपया नोट कीजिए विश्वस्तिक्य-"तत्त्वसूर्य विश्वाससूर्य"-राज्य राष्ट्र साहित्य संस्था- पृ. 19।
उन्हें अविश्वास आकृति कराती हैं। कथा-कथितायें वह केंद्रस्थ कर लेता है; कथानियाँ उन्हें के कवाय, पदम फलतन करता है।"1 पय ते गय को और आफ्रिका बदला है। त्यह शोक है इस अवस्था में ठोंट कथानियाँ और बडी कथितायें तथा सभी विषयों में वातान्त्रिक उन्हें देना चाहिए।

बालविद्यापीत्राल के इस अवस्था संक्षिप्त अध्ययन से बाल शोक है कि बच्चों के लकीर दिशा-निर्देश के लिए उनके गतिप्रेषण के अनुसूची तात्विक योग्यता करना अत्यधिक है। आधुनिक हिन्दी बाल साहित्य के तत्कालिक लेखक और "नव-दल" बालविद्यापीत्राल के लेखक के प्रेमजी अमरसिंह भारती के ये अंग्रेज मुख्य सार्थक लगता है - "अद्वाक हैं जिनकी बच्चों को यह न हो, जो हम चाहते हैं। यह है, जो हम चाहते हैं और उन्हें तथा अपने नेत्रों के लिए अनुप्रयोग करते हैं।"2 अतः सकल बालसाहित्य तथा के लिए बाल विज्ञान को ठीक जानकारे अत्यंत सुरू है। अब उम्म के विभा हैं कि बाल साहित्य है और तक वे तात्विक विषयों बालसाहित्य है 

1. बालसाहित्य का तृतीय क्षेत्र परिभाषाएँ

जैसे नाम ते तलक है, बालसाहित्य बच्चों का साहित्य है, "गिनहुआ सब "विश्वास किरारों का हित करनेवाला साहित्य" है।3 कुछ लोगों का दिखाया है कि बच्चों के साहित्य का समानांतर सब बालसाहित्य है। तथापि यह सही नहीं है। केवल मौट तात्कालिक या होटे आकार ते भी जोई सहि वातावरण नहीं बनता।

1. 'बालसाहित्य तथ्याक्षर' मार्च '76 पृ. 15
2. 'हिन्दी के केत्र बालगीत-संपादक अंफुकाश भारती: आमुख ते' पृ. 57
3. 'इन्दिरा नुपुर "पुलक पारिवर" नवंबर 1970' पृ. 57
बालक में उत्सुकता का वेग इतना तीव्र होता है कि आप चिंतित है या हांती है तो वह प्रियकर पड़ता है । कविताओं, कहानियों उसे आकर्षित करती हैं । मनुष्यकक्ष विकास के दौरान पर शोकता है । उसकी माननीय भूमि बदलती है, जिसे संघट करना झुकता है । वहाँ वातावरण का अवकाश भी कम है । बालसाहित्य यह अवकाश बच्चों को प्रदान करता है । इसमें आपसीमा व विश्वसीमा का कोई यथा भी नहीं है ।

हिन्दी के प्रसिद्ध बालसाहित्य लेखक डॉ. द्विकृष्ण देवतरे के शब्दों में, "पाठ-शाला की पुस्तकें और बालाधिकार तथा मनोरंजन के लिए लिखी गई पुस्तकें में मानक उत्तर भड़ी है कि यह का उद्देश्य सुन्दारित्व तथा रित्व-भद्रता के नियमों पर आधारित करना है, तथा दूसरी पुस्तकें का उद्देश्य बच्चों के लिए मनोरंजन, मानसिक और शीर्षक सुन्दर उत्तम प्रदान करने के साथ तथा आन्तरिक जीवन को बालाधिकार तथा विकाससीमा का समाधान प्रस्तुत करना है । इनमें दूसरे पुस्तक की पुस्तकें ही बालसाहित्य हैं।"  

---

1. डॉ. द्विकृष्ण विकास - "हिन्दी बालसाहित्यकारिता : उद्धंश और विकास" पृ. 9
2. डॉ. विकासनाथ सिन्हा - 'आधुनिक हिन्दी से बालसाहित्य का विकास', पृ. 11
3. हिन्दी बाल साहित्य - स्क अध्ययन - डॉ. द्विकृष्ण देवतरे, पृ. 2

---
बालसाहित्य मुख्यतः लोक पुकार के होते हैं, वहाँ यह है जो प्रोटैक्ट लेखकों
द्वारा बालकों के प्राकृत-मानसिक सत्तर के अनुभव लिखा जाता है, दूसरा यह,
जो स्वयं बच्चों द्वारा लिखा जाता है, फिर भी जिसमें बालसाहित्य की
योग्यताएँ अत्यधिक हैं। इस दूसरे पुकार के तारीख का लूप चिह्न (केकल एक
पुकार का "पुनर्विश्लेष") मानते हैं क्योंकि उनका कहना है कि "इतिहास के लेखन
में अधिकतर लूकी लुपी फार्टिकॉल का पुनर्विश्लेष अथवा अनुकरण की लिंग होता
है, जबकि लाइटन की तथा के लिए एक जलिल रचना पुलिया ते गुजरना चाहिए
है जो आभ तौर पर बच्चों के लिए कठिन लिखा है।"1

यह ही है कि कई बच्चों ने उत्तम कोटि की तारीख-स्थान की है,
फिर भी अपनी तीनों शब्द शब्दांक और अनुभव-होनाते के कारण बच्चों के लिए
यह बहुत तो भी अभी कठिन कार्य होता है। २: बालसाहित्य की तरह
लेखकों के विना अवधिक बालसाहित्य की संख्या बढ़ गई है। निरंजन
लेखक जो कहते हैं --- "बच्चों कोटण और अधिक तुलना-दियारे की जोड़ सकते
है, पर स्वयं उपन्यास शीतल का कार्य बढ़ता की कला पढ़ता है।" अलसब्ध के
पारस्क बच्चों की लिखियाँ, मनोभावों और कथनां को अच्छा तरह समझने-
याने दी बालगति लिख लिखा है। ३: इतिहास स्क्रिब्स है कि बाल मनोविज्ञान
के मार्ग कलाकृत्त की सफल बालसाहित्य लूजन कर भाषीय।

1-3 परिभाषाये
-------------------
गमन देखा कि "बच्चों की जुड़वाण विवेक मिलने सीधी होती है।

-------------------
1. "बालसाहित्य"-दि-दिग्गज राजीव भूल, "विद्वानभाषी मानसिकी
प्रथम पीएच, मई 93 पृ 8
2. निरंजन देव लेख "बालगति तारीख - इतिहास एवं समीक्षा" पृ 17
"उनका मन इतना वचन और कल्पनायें इतनी लेज होती हैं कि किसी निविचार निमित्त नहीं है बाल युग का साहित्य उनके लिए सिखा ही नहीं जा लगता।"।।।

इसे बालविखर्द लेकिंग गोसाइ साहित्य का मूलभूत अध्ययन के पहले स्थरी में लिखने की अच्छी तरह करते हैं, बताते हैं नहीं करते,

"फिर भी कृति भारतीय और पाश्चात्य धरातलों की बालसाहित्य-संबंधी परिभाषाओं पर विचार करता उपयोगी होगा।

1.3.1 भारतीय विचार

तस्कृत साहित्य की आधुनिक निधि "यक्ष्मावम" आज विखर बालसाहित्य की अनुपम धरातल बन चुकी है। इसके साथ साथ विखर्द जानवर ने ठीक समय लिखा था कि बोलते हुए जानवर या पशी किसी प्रकार बाल मन को प्रभावित कर सकते हैं। अतए इस बालविखर्द के पहले स्थर में परिवर्तन ने जानवर या बच्चों के लिए आत्मपरामो� श्रद्धा होनी आत्मपरामो� श्रद्धा होनी आत्मपरामो� श्रद्धा होनी आत्मपरामो� श्रद्धा होनी

इत्यादि उस कृति के पहले में उन्होंने यह लिखा-

"यहाँ भारतीय लगन : संस्कृत नामः नामयः भोगता ज्ञानकार्यानि बालाका नीलस्वादिकं कथयते।"।।।

इत्यादि उन्होंने कथा आदि के द्वारा दर्शन के संस्कृत बाल साहित्य की इसके एक कौन-सी कल्पना की जा सकती है।।।

"टैगोर ने बाल साहित्य की शायदत साहित्य माना है। बच्चे जैसा पुराना कृष्ण नहीं है। वह आदिक भिक्षु बैठे भोगता-भोगता, सप्त था, लूकार था, नया था, गोटा था, आज भी ठीक ईतरा दी है।।।

टैगोर के कथा का तत्त्व
d

16 निर्देशक प्रक्रिया - "शिक्षा कौमानिक" जानकारी 61, पू. 10
28 डा: दरिकृष्ण देशपाटने - 'हिंदी बालसाहित्य - एक अध्ययन' पू. 5
33 डा: विकासकारी मिशन - तारिक्ष साहित्य अकादमी में पुराणिक निबंध से-

'आधुनिक हिंदी में बालसाहित्य का विकास' पू. 19, 20
है कि बिल प्राकृत बाल स्वभाव की अद्वितीय होती है, उसी प्रकार उत्तम लाभमय भी उसे स्वभाव है जुड़नेवाला हो, उसकी प्राकृति-जन्म स्वभाव की शांत कर देने वाला हो। पितामन महिलायें तंबाकू रखते हैं, लेकिन प्राकृति मान और पृथ्वी को छूट दे है। पानी-पानीवालों के बाद लोग घर में धुंध लाते हैं, लेकिन बालकवर्ग खुली हुई में अपनी की बाजू में बिशंकों उपनाव दे देते हैं। प्राकृति का लाभमय बच्चे लोग इतना अधिक सज्जन करते हैं।

बालसाहित्य के महान प्रताप कवियों तोड़तलाल दिवेदी ने ऐसी परिभाषा की है - "आनंद बालसाहित्य यदि है जिसे बच्चे तसलता ते अपना लें और भाषा देते है, या तो अनेक साहित्यकार बालकों के लिए लिखते रहते हैं, फिर तब जिद बालकों के मन की बात बालकों की भाषा में लिख दे, यही लक्ष बाल साहित्य लेंगा है।"1

बालसाहित्य की स्रोतृदेश के लिए उन लेख जो ने विशेष-भाषा
समार किया था। उन्हें बाल साहित्य-जन्मदिनों अपनी धारणा इस प्रकार स्पष्ट
किया है -- "बिल साहित्य से बच्चों का मनोरंजन हो जाय, फिस्मियों रहे रहे,
और जिस सवार तो अपनी भाषाओं और कल्पनाओं का विकास कर दें यह
बालसाहित्य है।"2 तेलजी अपने कहते हैं, "बच्चों का साहित्य बड़े ही उन्हें
रचकर देते हैं। इसीलिए बालसाहित्य को तब भी हो कठिनाई यह है कि जब तक
पहले उनकी भाषाओं - कल्पनाओं ते पूर्ण। आत्मनार नहीं कर पाते, तब तक
उनके लिए प्र उनके अनुभव, आत्म तथा जीवननुभूति का लाभ आ पाना निराक
स्याकोडिक है। बच्चों की कल्पनाएं और अनुभव चढ़े ते सर्वश्रेष्ठ भिन्न नहीं हैं।

1 डा। एडवर्ड डेविड, 'हिंदी बाल साहित्य: एक अध्ययन', पृ 7
2 विश्वास वैशाली, 'जनवरी', पृ 10
उनकी दुनिया ही बच्चों की दुनिया है अलग देखती है। अतएव बच्चों का तात्त्विक लिखने में यही तकलीफ हो लक्षित है जो बच्चों के भार को रलटने-रलटने कम कर, बच्चों की सलाह, कौशल और विश्वास को स्थायी रूप से अपने घर में धारण कर ले। बच्चों के मन की अल्पकालिक चंपकला और उनकी कल्पनाओं के अलगत प्रतीत होने के कारण बच्चों के स्वभाव जैसा और स्वभाव बना लेना, बच्चे के लिए साधारण कार्य नहीं, इसके लिए निरंतर अभ्यास और मान्यता की आवश्यकता है।

“हिंदी के माध्यम लेखक डा. रामपुरवर राम० के अभिलिपि में “बालसाहित्य दो पुस्तक के हैं—संख्या उत्पत्ति लाभवान और प्रभाव डालनेवाला। उन्होंने कहा कि हम भारतीय इतिहास के स्वर्ण पर्यावरण और महान कथितों की कृतियों के बालसाहित्य केवल विविध चुन सकते हैं।”

बालसाहित्य के समर्थ लेखक डा. दिलीप देवसरे के ग्रंथ में “हेतु साहित्य एवं बालसाहित्य का जान समझता हूँ जो बच्चों की लची के अनुकूल, हमें भाषा में, उनकी तनाव तीव्र को विपरीत के साथ और उनके हान दिदिवास को गाते कर दें। युग के अनुसार तिथि का उत्प्रेक्षण बालसाहित्य-पत्रिका बालसाहित्य है या पुस्तक तात्त्विक उप-अभिभावकाली टीटिओ।” इनका यह दृष्टिकोण है कि बालसाहित्य पुस्तकालाल हो और नये समाज में यह प्रस्तुत किया जाय।

हिंदी के प्रसिद्ध बाल साहित्यकर्ता “नंदल” के संपादक भी कवितावर्ण भारती ने बालसाहित्य के संबन्ध में यह बताया है—“बच्चों को जो साहित्य मिलता आये, वह भला हो, जो उसका रागात्मक संबंध शृंखला के साथ, पूर्ण हो।

18. विक्षा भक्षाकार - जनवरी '61
28. डा. दिलीप देवसरे - "हिंदी बालसाहित्य - एक अभ्यास" पृ. 9
38. 'हिंदी बाल साहित्य - एक अभ्यास' डा. दिलीप देवसरे पृ. 21
लाभ, प्रृथ्वी के ताप, पल्स-परक्षण के ताप, नक्सल के ताप और पूजन के ताप जोड़ लिए तापक वाला बुद्धिमत्ता लगाने वाले, जीवन का अंशित वर रहे, तथापि प्रत्येक कार्य वही करता है, कि भी यही करता है। १ उन के गत में बाल

तारिक्त बच्चों को इस व्यारी-नहरी साथी धरती से राजनीतिक संबंध जोड़ देने-पला होना चाहिए।

श्री मंकेर सुन्यान धीरे बालतारिक्त लगते के माहौल लेखक हैं। अपके गत में

"बालतारिक्त अपनी परिभाषा में यह तस्वीरक क्षतिपूर्ति है जो बाल-अनाधिकाः। उनकी लघु, ग्रामीणता, ज्ञान-प्राप्तिविद्या और मानसिक और बौद्धिक अनुभूति से पूरी सच्चाई स्वयं निकाले के साथ थुढ़ा हुआ है, जो बच्चों को स्वतः

नवृत्तिक स्वयं बनाई केलिख प्रीतिः। जीतारिक्त भी जाने। बालतारिक्त के हेतु में भाषा

वीर शिक्षा के लाभ पर बच्चों की अभिव्यक्ति स्वयं नवृत्ति तथा ग्रामीणता का ध्यान

रखा जाना लगें बड़े शायर है। २

बालतारिक्त के तस्वीरक लेखक डॉं रामचरण ने कहा है कि "बालतारिक्त, तारिक्त का धार्मिक रुप है। यह बच्चों को धेरी यही उलझ तारिक्त है।

उपयोगीताकार्यक के बीच मंदिर, बच्चों केलिख संख्या ग्रामीण तारिक्त बाल तारिक्त

नहीं है। ३

उउटी बच्चों केलिख कैसी पुस्तकें गतत है, इसके बारे डॉं राजकार्य मुल्लीकारन

निकलते हैं "अध्यय बाल तारिक्त बच्चों की रोजगार की विराम को आयाम का

1. बाल तारिक्त: निगमित और मूल्यांकन, एन. लि-ई-अर.टी. पृ. 34
2. बाल तारिक्त समीक्षा: फरवरी १९९४, पृ. २७
3. 'आज फ्लॅंक' नवंबर १९८१ पृ. ९
वैदिकता चिकित्सा प्रस्तुत करता है तथा उसके आत्मा को दुविया का पुनर्निर्माण करता है। 1) महापालम के प्रतिष्ठा लेखक यह लिखा था: "कुछ चिकित्सकों बच्चे बार बार पढ़ते हैं, कुछ रसायनियों के नायकों से बज्जों वे तात्त्विक तारीख लेते हैं। बड़े बच्चे पर भी उस चिकित्सा का रस वे भूषण नहीं पाएंगे। उस चिकित्सा की अपने साथ रखेंगे। अच्छे बाल तात्त्विक का भवन तकनी है।" 2)

1.3.2 पाण्डुर्ग चिकित्सा

बाल तात्त्विक के लक्ष्य में पाण्डुर्ग चिकित्सा का भी यह मत है कि "बच्चों के तात्त्विक के गुण बच्चों के तात्त्विक में भी होना चाहिए।" 3) लेखक प्रकार चिकित्सा के मूल तत्त्वों को आमकर ही बच्चों के डायरेक्ट अपने बालमारीयों की चिकित्सा कर सकता है, उसी प्रकार बालतात्त्विक के लेखनों को भी अत्यन्त तात्त्विक- तुलना के मूल तत्त्वों का फायदा हानि होना चाहिए। "शास्त्रीय चिकित्सक और बच्चों के डायरेक्ट को समान आदर मिलना है, उसी प्रकार बच्चों के लेखनों और प्रौद्योगिकी तात्त्विक के लेखनों को समान अनुमोदन मिलना चाहिए।" 4) वे लोग कहते हैं कि बच्चों की नानासंख्या की समस्या होना कठिन है।

चूँकि ऐसे भी लोग देखते हैं जो बालतात्त्विक को बड़ों की बातों का तरल प्रस्तुतीकरण मानते हैं। इस भाषा को कहते सार्वजनिक तकनीक उत्पन्न है।

1) भारतीय आधुनिक विश्वशास्त्र-बालतात्त्विक विश्वसंघ संस जनवरी 1991, पृ. 29
2) 'बालतात्त्विक चिकित्सा'- पालन के एम. मेथुद, पृ. 16
3) "However, the standards ... basic to good writing in adult literature, are also basic to good writing for children-Constantine Georgiev 'Children and their literature.' P. 46
4) "The surgeon and the pediatrician are equally honoured. Authors of Children's literature and those who write for adults must receive equal approbation"-Caroline, C. Ruck & Doris. A. Young. Children's literature in the Elementary School. P. 16
कहते हैं - बच्चे पात्रता में एक ऐसी जाँच शोधते है जिनका जीवन-अनुभव बच्चों से जिल्लानुसार भिन्न होते हैं। बच्चों को एक उच्च दुनिया मोड़ती है, जिन्होंने जीवन के गुण, बाल-लुभ गतिविधियों के आधार पर निर्धारित होते हैं - बच्चों के अनुभव में आधार भर नहीं है।

टार्टर डार्टन ने यह बताया - "बालसाहित्य के नेरा अभिप्राय उन प्रकार-कपोलों जो हैं जिनका उद्देश्य बच्चों को सुसंग्राम में आनन्द देना है, न कि उन्हें गुरू रूप से विद्वानः देना, अथवा उन्हें सुखाना, न ही उन्हें गुरू रूप से रखना। जब मैं इस इलाज में सामान्य नियम के रूप में उन तम्म पुस्तकों को नामित

बालसाहित्य का राक्षित विकल्पनात्मको "गुण, विद्वान गुण में" नामक पुस्तक के लेखक पांडे उपाधि ने अपने बालसाहित्य के धे गुण बताये हैं - "ये सौतेला पुस्तकें मानने करता हूँ जो बच्चों को तात्क्षतिक हो जाता है, जो बच्चों को सुन और प्रत्यक्ष धारा का मार्ग दिखा है, घोषित सबसे तरल सोन्नय को आत्मानी ते अपना लें, जो बच्चों में चिर-स्थाई प्रभाव धारा है। मैं ऐसी युक्तियों पहले जिनमें बच्चों के लिए आर्क्त, सुन्दर विच दूरे, ऐसी पुस्तकें जो

1। 'For children are a race whose experience of life is different from that of adults. Theirs is a different world—a child’s world in which values are expressed in children’s terms and not in those which belong to adult experience.'—Lillian Smith 'A critical approach to children’s literature' p.15

2। 'बालसाहित्य'- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानिक्य विपावीठ, अप्रैल 95 (यू. 9) दे उल्लोहा।
I like books that remain faithful to the very essence of art, those that offer to children an intuitive and direct knowledge, a simple beauty capable of being perceived immediately. And those that provide them with pictures they like, pictures chosen from the riches of the world...enchanting pictures that bring release and joy......And books that do not awaken in them maudlin sentimentality that enable them to share in great human emotions...that give them respect for universal life.”...Paul Hazard — "Books Children and Men"  

P. 42-45
बालसाहित्य के विविध रूप

1.4 बालसाहित्य की अभिव्यक्ति के कई लागू होते है। विषयात्मक की सफलता उपयुक्त तःत्रित्विक वचन पर भी आकृति है। बालसाहित्य में बालकविता, बालकहानी, बाल उपन्यास, बालनाटक, बालसंगीती, साहित्य, यात्रा यूनानी, बाल-विज्ञान का साहित्य, बाल निबंध, पत्रकथा, मुद्रा, नृत्यकला, रिपोर्टेज, कैथिस्कस, फंसासी, पत्रकारिता लगभग आते हैं। उनमें कुछ प्रमुख दिशाओं पर विचार करते हैं।

1.4.1 बालकविता

बालकविता बालसाहित्य का मुख्य अंग है। तभी साहित्यक विद्वानों में मनुष्य भावि ने सबसे पहले काव्य की अपनाया है। उसी प्रकार गीत के साहित्यक जीवन में सर्पश्रृंखला कविता का आगमन होता है। श्री रामचक्रन मण्डली का अभिव्यक्ति है—"जिस प्रकार बड़ी की जीवन निष्पत्ति की प्रभाव होता है, उसी प्रकार बच्चों का जीवन संक्षेप की काव्यमय होता है।"

बालकविता में जल्द ते ते नया, गति, नाट, तीन-वर्ष आदि का लहर बोध होता है। लोंगिया सुनकर यह लोटा है, पुष्करित्विया सुनकर उसकी नींद खुलती है। नृत्य, नाट, भारतीय चेहरे आदि के प्रति उसका अंदाज आकर्षण है। लोंगिया सुनकर फलनेवाला गीतु बाद में ताकी दोनों पर छोटी कविताओं पढ़ लेता है। बालगीतों के संबंध में विवाद अध्ययन इतना अहसास के पूर्वते केंद्र में फैला जाता है।

1.4.2 बालकहानी

बालकहानी बालसाहित्य की दूसरी दिशा है। वह जगत के पुराने एवं बच्चों के लिए लम्बे समय रहस्यित है। बच्चों में सबसे बहुत-प्रेमलित।

"फंसासी कुटुंबितकस्ते साहित्यम्"—प्रेम बालसाहित्य इन्स्टिट्यूट, पृ. 101.
क्षणी के प्रति आकर्षण का मुख्य कारण है। डॉ. दरिकर्ण देवसरे के मतानुसार "क्षणा" मुका कच्चा होता है, नये नये सपने देखते हैं। उनके सागर तारा संतारा होता है। उनके मानसिक भ्रमण का विस्तार होता है और उनकी रचना बढ़ती है।

क्षणी में निरंतर घटनाओं का समापूर्ण स्थान, स्थिरता, एवं आदि होता वाहिक जो बच्चों की जिज्ञासा पूर्ति की बनाये रखता है। यह ऐसा प्यार तो जिसके माध्यम से बच्चों को कठिन से कठिन विषय भी सरलता से समझाया जा सकता है। कल्पना को उजागर करने का काम करता है भी अधिक क्षणी करती है। दूर कथाएँ, परियों की कथाएँ आदि बच्चों में रोमान्य, जिज्ञासा, उत्सुकता, ध्यान, आत्मनिर्भर आदि भाव पैदा करती है।

1.4.3 बालनाटक

बालनाटक बच्चों का सुमनामत्तक खेल होता है। यह बच्चों की आत्माभी-व्यक्तिक का तफल माध्यम है। बच्चों में अनुकूलण की जो लक्ष्य पूर्ति है उसका व्यवस्थापन यह में प्रकाशित होने का अवसर इसके मिलता है। अभिव्यक्ति का मूल छोटा है, अनुकूलण या नकल।

हास्य और मनोरंजन बालनाटकों के मुख्य तत्त्व होना चाहिए। व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास, शक्ति-शान में वृद्धि, तक उच्चारण-क्षमता-प्राप्ति आदि इसके लक्ष्य है। पौराणिक नाटक, ऐतिहासिक नाटक, पक्ष-पात्रों के नाटक, धात्य-धातान नाटक, साहित्य-पुराण नाटक आदि नाटक के अनेक विभाजन हैं।

1.4.4 बाल उपन्यास

फिक्षोरायत्था में पूर्णता पर छोटी छोटी क्षणियाँ की अपेक्षा है।

1. 258
बच्चों में नामक-पूजा की प्रभावित पतझड़ होती है। यदि व्यक्ति, पुलिस, अध्यापक, ब्राह्मण, फिल्म अभिनेता आदि को उपन्यास "टिकटे" मानता है, तो वह उनके नामकरण का आरोप करने जा सकता है। निश्चित रूप से वह अपने जीवनांतरों के खोज करने लगता है। "जीवनी तारिक्त बालकों" की लची बदलने, उनकी जानकारी का क्षेत्र दिखाई देने, उन्हें पतझड़ करते हुए उन्हें सच्ची समझ कर उनके विपक्ष कार्य करता है।

बच्चीयं एक व्यक्ति के जीवन के वास्तविक घटनाओं होती हैं। इसलिए बच्चों के सामने एक कथा चित्र के समान सुसंध्यां और आर्काकं टंब से इसे पूर्णतः किया जाना चाहिए।

1. डा. दिरीकृत देवदास - "हिन्दी बालसाहित्य: एक उपन्यास" पृ. 205
2. डा. दुरेंद्र धर्मरत्न - "हिन्दी बालसाहित्य का उद्ध्वध और विकास" पृ. 45
14.6 विज्ञान-वज्रधारी बालसाहित्य

शान-विज्ञान के साहित्य से बच्चों को चारों ओर की दुनिया की सबी जानकारी मिल सकती है। उसे रोयक टंग ले प्रस्तुत किया जाना चाहिए। निरंजार देखिए कहते हैं — बच्चों के लिए शान-विज्ञान का साहित्य देखे समय लेख का ध्यान इतना रखे कि उन्हें मनोरंजन का ऐसा पूरा हो कि बच्चों को अपनी समस्य पर जुरा भी जोर न देना पड़े और उनके शान में वृद्धि हो जाये। उन्होंने अभिप्रेयन का टंग इतना आकर्षण और रोयक दोनों चाहिए कि बच्चा उनकी ओर आकर्षित हुए बिना रट कर न ले। यदि शान को रोयक टंग ले प्रस्तुत करने से बच्चों की कल्याणा-शक्ति को अधिक उर्धर बना सकता है।

14.7 यात्रा-यात्रान

साहसी पुरुषों के द्वारा बालसाहित्य में यात्रा प्रदर्शन किया जाता है। पवित्र प्रक्षेप, प्राण-प्रक्षेप, लोकों और अपरिहर्ष देशों का यात्रा यथा वर्ण बच्चों में रोाद्ध, कौतुक और विज्ञान की अनुभूतियाँ पॉट करते हैं। सथ दी उनके शान-सीमा का सही पिछलाई भी होता है। उन देशों की यात्रा किसी बिना पुस्तकों के माध्यम से बच्चों को पढ़ने की भौगोलिक स्थितियों, आधारों और संस्कृतियों को देखने का सबसे मिलता है।

बच्चों को मनोरंजन प्रदान करने वाली बालसाहित्य लिखाओं में चुटकुले, पत्रकारिता, आदि का भी महत्वपूर्ण स्थान है। कोई भी विभाग ही, बालसाहित्य का प्रभा कल्यंब बच्चों को मनोरंजन प्रदान करना है, पृथ्वी सीख देना नहीं है। मनोरंजन के माध्यम से उन्हें विभाजित प्रभाव डालना, बालसाहित्य का तक्ष्य

---

18 "बालगीत साहित्य - इतिहास स्मिरण"— निरंजार देव पृ. 97
The Sounds of the words of poetry resemble the sounds of music. They are a pleasure and delight merely to listen to as they rise and fall and flow and pause and echo-like the singning of birds. "Ibid P. 100
बालगीत का स्वरूप

यही कहा जाता है कि "गीत तब सबसे विद्वेष्ट तात्त्विक रूप देता है।"¹ गीत बुद्धि को तूता है। यह पाठक के मन में अनुभूति जगाता है। संगीत और कविता कार्यों से हुने जाकर मन और बुद्धि को प्रभावित करते हैं। लेकिन गीत और कविता में बहुत बड़ा अंतर है। गीत छूटने पर भी प्रत्येक कविता को गीत नहीं कहा जा सकता। तब तो यह देखें कि गीत की विनिन्द्याय रूप ढाया है।²

ब्राह्मणी महादेवी कमरा से गीत की ऐसी परिभाषा दी है -- "गीत व्यक्ति-गत सिरमा में तीव्र तुक्कायक अनूठीत का यह शेष-रूप है, जो उसी ध्वनिवात्रक में गेथ छाते रहे ।"³ गीत और कविता का अंतर यह है कि कविता विख्यात-पूजन है तो गीत विख्यात-पूजन। गीत में व्यक्तित्व अनूठीत की प्रथमता है। लेकिन बादश जगत को क्रिया-कलापों का ध्वनिवात वर्णन ही कविता को समझती है। अतः कविता का विख्यात-क्षेत्र अविवात बालगीत होता है। कविता में किसी दूसरे की भावनाओं भी अभिव्यक्ति हो सकती हैं। किंतु गीत केवल यह अतिवाद छो। उसमें कवि की अपनी अनूठीतिया अभिव्यक्ति है। निर्मातार देवी के शब्दों में -- "गीत की रचना केवल पहली शर्त यह है कि कवि के बुद्धि में एक दर, टीत, सहरन या भुलकन ऐसी दौरे, जिससे, बिना गीत गाये उससे रहा दी नहीं जा सके। गीत मन की एक विवेक रिश्तियी में अपने आप ध्वनिवात होते हैं।"³

सुप्रसिद्ध बालगीतकार और कवि स्वरसीप विंधित रामनरेश शिपाडी गीत

¹"The purest literary form is the lyric poem" Encyclopaedia Britannica Vol. 93. 35.
²"बालगीत तात्त्विकः इतिहास एवं सादीक्षा" - निरक्कार देव लैकब, पा. 13
³"बालगीत तात्त्विकः इतिहास एवं सादीक्षा" - निरक्कार देव लैकब, पा. 14
का एक तल्ला नगणा यहाँ प्रस्तुत करते हैं -- गाथा के किली स्टेशन पर कुछ लड़की-पुरुष का चुना दुल्हन की लड़की पर बेचने के लिए दिखा करने आये थे। उनमें
उस युवा की पत्नी भी थी। जब वह युवा रेल में बैठकर चल डिया तो निरर्तता
विलास-विलासकर रोने लगी। उनमें सबसे गुरु झर उसकी पत्नी के कठ से अधानक
फूट पड़े। उस गीत की पंजित थी -- "हेलिया टॉपर्ट गोर मिया ने कैभागी"।
गीत का इसलिए बख्तियार बादशाह गिलाना है?

गीत के मुख्यतः ये तत्त्व मानने गये हैं --
वैध्यतत्वता, भावों की तीजता, लघुत्तमता और गैंटा या संगीतात्मकता।
निरर्तकर की कहते हैं -- "गीत के अतिरिक्त वैध्यतत्वता और संगीतात्मकता ही उसे
कविता तो दिखाया माना लगा है। कविता ऐसे विषयों पर भी लिखा जा सकती है
विनन्दा वैध्यज्ञान उसने अपने मनोभावों से कोई निजी कारण से नहीं। उसका
उच्चतम या संगीतात्मक भी होना आचार्यक नहीं। पर गीत उसी कविता की
कहा जा सकता है जो स्थानीय-निरुपन तो, और जिसे गीत के वादों पर
लाभकर गया जा सके।"2

लेकिन बच्चे अपने लिए गीत ऐसे लिख सकते हैं । हालांकि, हालांकि, हालांकि भावों की बुद्धिता
होने पर भी छोटे बच्चों में उस अपने मनोभावों को अभिव्यक्त करने की क्षमता है
और न उनके पास वह शब्द-मंजूर जिसे वह अपने क्षरे, उल्ल्य, भि, निराकार
आदि की शब्दों में अभिव्यक्त करें। इसलिए उन्हें बच्चों पर आशय करना
पड़ता है। यद्यपि इम कह नहीं सकते कि छोटे बच्चों बख्तियार बालतात्त्विक लिख

1. "उल्ल्यरविषयम भाषयिङ्गम नवम्बर 1978" पृ. 6
2. "बाही पारी" पृ. 1
दी नहीं सकते, फिर भी शब्द ज्ञान का अभाव और तीमित जीवनानुभूति के कारण, यह बच्चों के लिए उतना असाधारण नहीं है। निरंकार जी लिखते हैं "बच्चे छोटी छोटी लयालमक तुफानिन्द्रियों" जो जोड़े लक्ष्य छाड़े हैं पर त्वर्य अपने में गीतों की रचना नहीं कर पाते। इसलिए उनके साथी उपयुक्त बालगतिग लिखने का कार्य बड़े को करना पड़ता है। बालस्वभाव के पारंपरिक, बच्चों की सचिवालय, भावनाओं और कल्पनाओं को अच्छी तरह समझने-वाले ही बालगतिग लिख सकते हैं।

अब यह प्रश्न उठता है कि प्रीट कथा, लिखा मधुर बयोन बिग युवा है, कैसे बालगतिग लिख सकता है 9 प्रीट लिखते होते बालबाप जिसको खेल-पूर्ण दुकान नहीं होती है अथवा मन्द जाती है, और यह गीत की लेखने के लिए बड़ी विशेषता "वैधकितक" - एक पूर्व कलिता बालगतिग कैसे कहानी लिखता है 9 बच्चे द्वारा एक दूसरी दुनिया के बच्चों के गीत कैसे लिख जाता है 9 कैसे तब युवा खेलाधिकार में देखा है, बच्चों की दुनिया बड़े की दुनिया से बिलकुल भिन्न है 9। उनके मनोभाव, जभावादारे तब बड़े से भिन्न है 9। इन्हें प्रीट लोग तुरंत-पूरा समझ नहीं पाते, इत्यादि उन बच्चों के लिए कथिता लिखना बहुत ही कठिन कार्य है।

यह कठिन कार्य भी समझ होता है जब बड़े उन बच्चों की सचिवालय, मनोभावादारने और आकाशान्ति के तादात्म्य स्थापित कर लेता है, त्वर्य एक बच्चा बन जाता है 9। वह अपनी कल्पना में बच्चों के मानसिक भावों को समझकर उनके बच्चों की सत्य, सहज भाषा में स्थापित कर देता है। वह बच्चे के लाभ सोचने, देखने, कल्पना करने का प्रयास है और उन कल्पनाओं और भावनाओं को बालगतिग में उपस्थित कर लेता है। "बच्चों का कोई लेख या कथा जब तक अपने बड़े होने के तारी अभाव के ही अधिकांश के बच्चों की दुकान से देखते हुए त्वर्य बच्चा बनकर अनुभव न करते हैं।

11 निरंकार देव लेखक "बालगति साहित्य -इतिहास एवं समीक्षा" पृ. 17
21 यहीं यहीं पृ. 17
Something of the child must live within the adult man, or his hand will not be able to pen words for children. Rabindranath Tagore (A centenary volume, Sahitya Academy P.172)

1. वालगीत साहित्य - इतिहास एवं समीक्षा - निरंजन देश लेखक पृ. 17

2. "Something of the child must live within the adult man, or his hand will not be able to pen words for children."

3. "पुष्पधारी" - आशान "मधुकर विकल्प कृतिकायाचित्रक ते उद्धर ि पृ. 19

4. निरंजन देश लेखक "वालगीत साहित्य - इतिहास एवं समीक्षा" पृ. 19
महादेवर कार्य ने अपने एक लेख में तथ्य वालत्तिव झिका गया है - "प्रस्तावे केस में वालत्तिव झिका गया है। किन्तु उन्होंने व्यक्तियाँ ने लिखा है कि अन्ततः तक बालक का-सा दृष्टि लिये रहे। उसके अलावा श्याम जीन ने कहा-हुई वालत्तिव के लिये लिखा है, लेकिन अन्ततः तक वे बालक के-से दृष्टि के रहे। भिड़ात सैती की रही, कल्पना सैती की रही और उन्हें ध्यान छोड़े ध्यान छोड़े हैं, लूहा घटे हैं, उन्हें भी उनकी लम्बाई के सैती की रही। विश लिखने को पाये मे निर्देशों के साथ फाल रखा वहम या लखा सारतिव लेखा है। जब भावना कुछ भी जानी है और उस कुछ वस्तुओं में तीनित हो जाते हैं, उन सीते हैं इससे कथा सोन-थर्म है, इस्तो की रार देखा है, इसमें जब कथा नवीनता है, तब इम तरल और सीधे सारतिव की लघुता हार्दिक कर सकते। सारतिव के जीवन की निर्देश नवीनता है, उसी जा उद्योग है, यह यी चाहिए है कि जिल्लों अपने एक बार देखा है, उसे इम लाख बार देखकर भी नवीन पायेंगे। जीवन का कोई भी कौन रैली लगा है, यह भी गंभीरता, तत्कालीन अवस्था है जिसमें आप नवीनता नहीं पायेंगे, और नवीनता को बो देना ही अपने शेषम को मिलाकर कर देना है।" ।

इसलिए वालत्तिव तथ्यातिव के लिए यह अविवर्तत है कि यह अपने तथापित हो प्रस्तावे के तथापित है जो दृष्टि-पूर्ण अवस्था है। वालत्तिव के साथ लेखक डॉ. अक्षयकुमार वैद्य ने कहा कि "वालत्तिव लिखने के लिए वालत्तिव का उपयोग कर सकते हैं। जब इसे लूहा नहीं रहता, तो उसे इसके-वालत्तिव का नहीं रहता। उस वालत्तिव की व्याख्या, वहाँ के लिए भी सारतिव नहीं लिख पाएगा... बहुत ही पक्ष भी।

द्वितीय विवाह यह आदर्श है "वालत्तिव की मान्यताओं के साथ।" प. 16
जिले में मन में वधुन फिकलोल करता रहता है, वह निर्दय उन खद्दरों के लिए लिखता है। तब कई लोकों ने उनका नतीजा, खद्दरों ने लिख कुण सार्वजनिक लिखते में कार्य किया है। 1 इन पुस्तिकाओं के अभिलेख के साथ दी गई है कि विना वाल्मीकि ने, वाल्मीकि ने वाल्मीकित्व-रचना संग्रह होने नहीं ।

इसमे पहली कहा जा कि ग्रीसी साहित्यके कार्य ने गीत की सच्चाई के निजी से जोड़ा है। लेकिन इन्रूप नीति का मत है कि "वाल्मीकि का लेखन सिखी का ठीक है, तार्किक श्रेष्ठ है, इसलिए ग्रीसी की पत्रिका बाल-
गीतों पर लापता नहीं होती।" 2 इनके निर्देश के ना का भी यह मत है कि -
"चारों की भाषाओं की बहुत करीबी आवश्यकता के मूल्य पर भी उन गीत
नहीं कर सकते।" इस पुस्तिका वाल्मीकि ने मुख्य तंत्र के ही को ठीक है, गीत
नहीं, पर इसमे यह खद्दर की पहुँचा के लिए "वाल्मीकि" का खता प्रवर्तित हो
हुआ है कि उसे ग्रीसी पूरा रूप में जाना जाता है।

इनके निर्देश सानो बढ़ते हैं - "वाल्मीकि वाल्मीकित्व तथा रचना उसे, ख़ाफ़ वाल्मीकि वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने वाल्मीकि वाल्मीकि तथा रचना उसे, वह प्रत्येक अपने ।

उन्हें नाट्यकेवल दंग ते पढ़ा

प. 5

प. 11

प. 22
The child may not know why he likes a book. He only knows that as he reads, he has an enjoyable experience."—Carlotte S. Huck and Boris Yung, 'Children's Literature in the Elementary school'. P. 2
वालासल्य रस के गीत

वालासल्य रस के गीतों में यह सुनाया जाता है कि "वालासल्य रस में गत्वियों की अपनी आध्यात्मिकता को प्रभावित करता है और लोकियों में गत्वियों के लिए माता को सद्भावनाओं को... वालासल्य रस के गीत" कहता पाना करते हैं।

1. ओम निममल "हिंदी वालासल्य रस परिवर्त और प्रथम" पृष्ठ 65
2. निरस्कर "वालासल्य तारिति -जलितास एवं सागिका" पृष्ठ 24
के मन है तर्क उत्पन्न देती है, उसी प्रकार लोकियों भी गद्दाहियों के मन है तर्क़ पूर्ण निकलती है। १ विरोध कपोल लोकियों को भी बालगीतों की बेबियों में रखी पाती है २ इसलिए कि "वे बच्चों के लिए ही लिखते पहले बालगीत निरनिर बनते हैं और बच्चों के मनोभावों को पूरक उनका मनोवेशन करते हैं।" ३

तुरंत ते श्रीकृष्ण की बालगीतों का बिखरना मनोवेशनात्मक दर्शन किया है, उतना स्वाभाविक विश्वास वाल्मिकित्व में अन्य धर्म है। वाल्मिकित्व के इतिहास की दृष्टि में तूर के पढ़ों ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई है, पर व्यक्ति जीवन के धर्मात्मक पर लिखे रहे व सारे पढ़ बालगीत वाल्मिकित्व नहीं करते जा सकता।

इसका विवेक्षण करते हुए निर्देशक जो कहते हैं—"कपोल केवल बच्चों के लिए जानेवाले प्रेम के आधार पर लिखते जा सकते हैं और उसे पढ़-नुकसान करने को उसमें रस की अनुभूति को लक्षित है—वैसे तूरदास की "अभेद के, उसे सारे गई सुन गोद लें भूमिका ने लिखे"। पर बालगीत लिखने में बच्चों की बच्चों के प्रति

निपटे वहाँ लगते हैं भी स्वीकार आने बालगीत बच्चों की अपनी भावनाओं

प्राप्त किया, लिखित और कल्पनायों के एक तल्प को उसमें जोड़ केना पहला है। ३

तूर के पढ़ों की प्रेम लक्षित अपने आराध्य देव कृष्ण के प्रति भक्ति और अवस्था का भाय है। यही नहीं,"बालक अपने साहित्य में अपने पौर-साहित्य और केदारों का सुन्दर वर्णन पदकर उसने प्रहार नहीं कर सकते, जिलाने अपने नन्दनाश और अपनी भावनाओं पर आधारित विनिर्देश की देखकर, वे आत्मा प्राप्त कर सकते हैं।" ४ बालकल्पना के गीतों में बच्चों की कल्पना समता है, वहीं उसकी विचार-प्रस्तुत बालगीत की कल्पना पर ही आधारित है। अन्तर तो इतना है कि

1. निर्देशक देव लेखक  "बालगीत वाल्मिकित्व -इतिहास एवं साहित्य" पृ 70
2. वहीं वही साहित्य पृ 70
3. वही वही साहित्य पृ 70
4. डा. मुकुट दोभाल -"साहित्य बालगीत" में प्रारंभिक एवं कल्पनातत्त्व पृ 32
"Plant a green bough within your heart and the singing bird will come. It is this springing shoot within a man's mind, that turns his attention to writing for children, for without the singing bird's prompting, the words without come."

Rabindranath Tagore 'A Centenary Volume' P. 172
1.5.4 बालगीताओं के गुण अथवा कलित

बालगीताओं के गैतिया, पुनःरूपांत्र, प्रिया-व्यावाह, तात्प, कथा-सत्त्व, विद्यया 
और चित्र आदि कई गुण बताये गये हैं।

1. गैतिया, ललातमकता और उन्दवदाता

बालगीताओं का एक महत्वपूर्ण तत्त्व है गैतिया। गीताओं के रसिमा बालक जन्म 
से लेकर लल, तल, गति आदि ते आकृति है। माँ की मथुर स्वर लययुक्त लोकी 
सुननेवाला बिपुल बहुत बलकी निधारिणी हो जाता है। बाल्यपतित्रा में यह उन गीताओं 
को स्वयं भा तकाता है, पदने दुराने लगता है। निपरितिजी कहते हैं—“तब बाल-
कथिताओं राग-रागिनियों में बाँधकर संगीत के स्वर-लय के आधार पर भी ही न 
नायक जा रहे हों लख दे तत्क्र में उत्तर-भद्राय के साथ गा तकते हैं।”1 
पिक्स-वस्तु से भी अधिक कार्निक की गैतिया-अर्थ विभागति और ऊं जलन बाध्य 
को अधिक आकृति कहते हैं। गैतिया के कारण उसका एक दिवित छंद और लल 
का अंत्यानुपातिकधार होता है। बिना इस दिवित के, बालगीत सेवा नहीं। 
तोले के हल्की में निम्न विशिष्ट बालकितार का तल और लल फिक्ता मोक्त है।

"लल पूल ली लल चोंच है
लल नी में रेखा
में ने उसको सांव लकेर 
मुड़े से पर देखा।”2

1 बालगीत साहित्य इंस्टिट्यूट "भलानुर अज्जिनान हृदकल तालिकायत" पृ. 15
2 राजन्य बालसाहित्य इंस्टिट्यूट "बलानुर नुटिकल तालिकायत" पृ. 114
2. पुनरायुक्ति

कथिता में धार्मिक शब्दों की आयूर्विता बच्चों में गीतों के पृथ्वि आर्की बदलने में सहायक है। आयूर्विता गीत बच्चों में उब ढीला करते।

पुनरायुक्ति-प्रयोग से तात्पर्य है शब्दों, पद्धति और वाक्यों को हुराना, अनुरुपत्तिक शब्दों का प्रयोग करना आदि है। अनुरुपत्तिक या धार्मिक शब्दों से पुकार पन्थियों की पुनरायुक्ति का एक उदाहरण देखे—

कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू कू को
43 ध्यानांत्य

छोटी छोटी मुक्तक कथिताओँ में केवल एक की भाषा या सिधांत अभिव्यक्त
होता है। लेकिन बच्चों में सहज प्रियता की पूर्ति के लिए इसिन्दिगृहसत्तक
कथितायें भी तल भाषा-वैली में दिया जाना तार्किक है। गैर छोटे पर पर ध्यान-
कथितायें पाद करने में भी बच्चों को कई प्रतिनिधि नहीं ठीक किया। कथितात्म
कथा का ठीक दोनों पन्ने है। कथितात्म लिखना कठिन कार्य होता है। इस
की ध्यान-कथा-कथा-वैली में बालकथितात्म प्रस्तुत करना पड़ता है। उदाहरण देखिए ।

"क्या तुम बोल तकरी हो?
वर्ण में बुंदे पर में २
क्या तुम दिखला तकरी हो?
लोड-जोडकर जल को पर में ३

हठता हृद मुन्नी के
गरम फिया जल बंकर में
गर्मी खंडकार पानी
बनकर निकला भाष क्षण में।

ठंडी धारी की ठंडक ते ठकका
धरती पर टपकका धर्मा ती बूढ़ों में।

5 ध्यान

हैला और हैला बच्चों के लिए सहज है। स्वतंत्र गर्वोन्त हो दरा बच्चों
को शारीरिक और मानसिक आरोग्य प्रदान करने में धार्मिक समस्याकृति तथ्योत
है। निरंजन जो के शब्दों में — "गर्वोन्त का गुण वह पलकी शर्त है, जो
प्रत्येक शिशु खा बालगति को पूरी करना वाला है। जो इस पलकी शर्त में

5 ध्यानानत्य - इतिहासाध्यायी राष्ट्रीयपुक्त विश्वविद्यालय । अगस्त 93 पृ 74
वृक्ष जाते, यह चाल या निषुष्टित बच्चों के लिए उपयोगी हो जा सकता। 1 शेष बालों में या उल्लेखनीय में बच्चे अपने इतिहास बदलते रहते। राजनीतिक न्युनतावाद के अनुसार "बच्चों के लिए इसी मात्र बिल्कुल थी कि सभी चालीं वैश्विक तरह का है उपयुक्त है।" 2 टों जयपाल तरंग के नत में "हास्य में बच्चों का भरपूर मनोरंजन होता है। मनोरंजन व्यक्तित्व मिश्रित का मन उबलता है जो मन को नयी धारणा, नये वचन और नये परिवर्तन के लिए अनुभूत होते हैं।" 3 अन्य चित्रकथाएं, टास्क, फानटोम आदि बच्चों में अत्यधिक लोकप्रिय हैं। अतिवृद्धि वर्णन करने, असंतुलित वस्तुओं को एक करने, आदर्शभित्र स्थिति उत्पन्न करने या उल्लेखनीय व्यक्ति करने हास्य पेय पाया किया जा सकता है। उन्होंने की नयात्मकता हास्य को बदल देने में सहायक भी होती है।

63 विश्वस्त

बालगोलियों का केन्द्र बच्चा और उसकी दुनिया है। एक निश्चित के लिए यह प्रथम बिल्कुल नहीं है। उसकी परिभाषाओं और परिचितियों देखने और समझने की लीजिए विचार। उसमें स्थित है। इसे: उसकी विचारणा को गरीब अन्नवाले देशीयपूर्ण किस्म चुनकर तरल यथा मनोरंजन का संग्रह से प्रस्तुत किया जाना चाहिए। बच्चे की नयात्मकता एवं यथार्थ दुनिया के संबंधित सभी वस्तुएँ, उन्नतिः, भाव आदि सबकुछ हमें आते हैं। दुनिया में केवल बच्चे की नहीं, बल्कि वेतन वस्तुएँ, पुस्तक-पत्रिका, व्याख्यान यथा। मान्यता-सूचक विचारों, विचारांकी भाषाओं, रुढ़िशाय, पास्त्रिक नयात्मक एवं मनोरंजन वाणिज्यों, छोटे मुद्रणों और अतिमानुष, वंश के भूत-

18 'उत्तरप्रदेश' बालविश्व-85 पृ. 18
19 'भारतीय आधुनिक शिक्षा'—बालविश्व '91 पृ. 30
38 'भारतीय आधुनिक शिक्षा'—बाल साहित्य प्रिंटिंग 1991 पृ. 56
देखताएं, जल, यापु, अग्नि, अंतरिक्ष अनौपचारिक और पतंताती जीवियाँ, परियाँ, पौराणिक कथाएं आदि सबकुछ काटे की इति दुनिया में जाती हैं।

बच्चों के इस मनोवैज्ञानिक भूमि को समझने लाये लेखक यह कथित, बच्चे के लिए
इस विभिन्न भूमि के अभींं मंज़ूर ते मौलिक फिक्षप युन लेते हैं। ऐसे एक लेखक
यह कथित अपनी रचना के संबंध में यह कह सकता है - "मेरे लिए बालगीत एक जीवन
बच्चा है, जो कभी पुलक, कभी प्रसन्नतापुर, कभी उठील, कभी चंपल, ठीक हवा,
आग, धारी-सा। में सर्वे पर पल उसे अपने आत्मात्मा देखता हूँ, उसे दूरकर
बोलता बतियाता हूँ। और उसे आत्मसात कर मंज़ूर के बाद उसे उत्तरा लेता
लौटा देता हूँ। रचनाकार के लिए ऐसा किया जाता उसका मूल धर्म रहै।

बालवाड़ू-मध्ये के वातावरण प्रेमिक रागनरेन ठिपाठी ने बच्चे के लिए आत्मात्मक
वैधिक पर्यावृत्त सचिन पुस्तकां को ऐसी फूल तैयार की है —

\[\text{अपने कथानियों अनुसार}\]

---

1 "The proper subject matter of children's literature.....

is children. More broadly, it embraces the whole content of the
child's imaginative world and that of his daily environment.....

The population of this world is made up not only of children
themselves but of animated objects, plants, even gramatical
and mathematical abstractions, toys, dolls and puppets, real,
chimerical and invented animals, miniature or magnified
humans, spirits or grotesques of wood, water, air, fire and
space, supernatural and fantasy creatures, figures of fairly
tale, myth and legend" - Encyclopedia Britanica Vol. 23 P.208

2 बालवाड़ू-मध्य स्पेन - अप्रैल 1997 (२)
Poetry is a speaking picture and painting is a silent poetry.
During his earliest and most impressible years, picture books enter a child's life. They enter through the eyes and ears to stimulate the mind and emotions." Constantine, Georgion-". "Children and their Literature" P. 63
प्रकारान्तर ते कवितार्या भी क्षय, सुन्दर और संयुक्त जोनी वापिस ।

1.65 बच्चां की कविता और बड़ा की कविता में अन्तर

मुख लोगों की मान्यता है कि, कविता बच्चा की हो ता बड़ा की, कवि
कविता अफवाह होती है । किसी विशेष बच्चा ते आफवाह इसके नज़री कविता
बुद्धत्तकता का सुना है क्योंकि ते अब देखा है कि बच्चा की
एक सत्यचारिता सिन दुनिया होती है । उनके मनोभाव, सत्य, कल्पनायें भी बड़ा
से भिन्न हैं । तत्कालीन और शरीरी में भी अन्तर अफवाह आ
आपस ।

बच्चा की कविता और बड़ा की कविता का मूल अन्तर सिद्ध का है ।
बड़ा के साथित में भावनाओं का सार और शरीरी बड़ा की कल्पनायें के
अनुसरण दिखती है तो बच्चे के साथित में उन्हों के अनुसरण । व्याख्यात्मक बालकथा-
शिक्षक रामानुज रिसाइटो कहते हैं—"रामानुज रिसाइट शीत दिखता है और बालगत
जा तत्काल अनुसार विद्याकों की दुनिया में सेवन का अभिज्ञान होता है । लेकिन
मान है ते, सारी बालगतीयों का कविता का तत्काल भी नहीं।

भूत प्रकार बड़ा है कि बच्चे के नीति व्याख्यात्मक और अनुसरण टोकर लिखे जाते
तो बालगतीयों को लिखने का प्रेरणा गांव की अपने उत्तरार्थ भूतपूर्व नहीं
आते । किसी बड़ा की कल्पनायें और भावनाओं से प्रेरणा पाकर बालगत
सिद्धत है । निरंतर जो लिखो है—"बालगतीयों के प्रेरणा के कविता
उनके अन्तरार्थ सिद्धें नहीं लिखते । न उसकी भावनाओं ही उसे व्यक्त करने

11. "बालसाहित्य"-दिनदिगाने राजवृत्तिक विश्वविद्यालय
मानाधिकारी विभागीय अधिकार 1993
d.65
21. "बालसाहित्य" समीक्षा अधिकार 1997
d.10
Poetry unlike other forms of literature is common ground for both children and grown ups. But since childhood is brief and since there is much poetry that waits on experience, it is I think, generally conceded that anthologies for children offer the widest range for individual response.

Lillian Smith: वाचनसाहित्य-एक अध्ययन द्वारा विश्लेषण द्वारा पृ. 210 तथा उपन्यास वाचन जुलाई 1995 पृ. 197
की अधिकता में नाले जानेवाले खिद्द, नये प्रलोभ, नये प्रयोग, बच्चों को स्वाभाविक रूप से ग्राह्य नहीं करते, आरोपित कर सकते हैं।

और यह वस्तु है कि बच्चों के लिए अधिकार या लाभ को साहित्य से
अलगा घाटे हैं। दूसरी की दृष्टि से बच्चों को दूर रखना चाहिए।
अभाव विद्याओं, आरोग्य गृह, माता-पिता के विवाह, धार्मिक और प्रेम-संबंधी विषयों
को छोटे बच्चों के साहित्य से दूर रखना की आवश्यकता है। इस दृष्टि से देखा तो
बच्चों के लिए समय विधान-वधन में जो स्थानता कार्य को मिली है, वह
बच्चों के साहित्य में नहीं मिली है। बच्चों में नानाधीन पुनरूप का विकास करने-
वाला मनोरंजक साहित्य की उनका अपना साहित्य को लक्ष्य है।

1.7: बालगीत - भाषा और गैलो

पैसा यह जाना है कि बालसाहित्य लेखक को स्वप्न कार्य किया जाना चाहिए, तो
उनका केवल वह गुण जिसका अधिक आकर्षण होगा उसका कार्य का
अभाव कार्यक्रम से बुझा जाना चाहिए और इस अभाव का सुकून आधार कार्य की
भावना और गैलो है। साहित्य में भाषा और भाषा का सम्बन्ध शब्द और बीच के
तरंग है। अतः भाषा के तीर्थक जो तकनीक साहित्य नहीं है। तात्पर्य यह है
कि जिस प्रकार समझना गरित है उन तक अपने भाषा को स्थिरित रखने के
दृष्टि की भाषा का प्रयोग करना अनिवार्य है। इसलिए वह भाषा जिस प्रकार
दिशार अंतर साहित्य में आती है, उसके लिए बाल के साहित्य में नहीं आती; 
बालक पृथक स्तर के बालसाहित्य में उसी प्रकार की भाषा का सुकून लघु में प्रयोग
किया जाना चाहिए। जैसा कि बालक स्वयं बोलते हैं। बालसाहित्य के लेखक
अपनी धिलं-पृथ्वी की एक बच्चे के स्तर की ओर लगते हैं, अपने व्यवहार की याद

1. 'बालगीत साहित्य - इतिहास और समीक्षा-निरंकार देव सेकार' पु. 17
कर वह भी एक बच्चा बन जाता है। टैगोर ने यही कहा है — "जिसके मन और
स्मृति में अपने बच्चन की मदुर स्मृतियाँ, अनुभूतियाँ, घटनाएँ, व्यक्तियाँ तथा
भाव प्रभाव के समान ताजा रहती हैं, वे यह बच्चा केवल लिख पाएँगा।" 1
तब यह उस शिष्य की आरेखीँ से दुनिया को देखने लगता है, उसी के मनुक
भाषा का पुरोग करता है जो बच्चा को एकदम आकर्षक लगता है।

बच्चों का शब्द-शब्द सीमित नहीं होता है। "ऐसा माना जाता है कि एक दश-
वर्षीय बच्चा केवल भाषा में करीब 5400 शब्द, और 2 वर्षों तक की उम्र के
बच्चे को करीब 7200 शब्द परिचित होने 2 अतः बच्चों को विभिन्न तरह
के बच्चों के शब्द-शब्द की जानकारी अथवा दोनों वापस । इसलिए म्यारी
बाल कथिताओं को भाषा ऐसी है कि बालक माता की बोली या भाषा के
स्थान पर भाषा तीसरे, अतः भाषा आधुनिक दोनों वापस ।

बालकथिताओं में व्याख्यायों को महत्वपूर्ण स्थान है। यद्यपि बच्चों के लिए
तुल्यान्त शब्दों, अनुसारणात्मक, लघुत्वात्मक शब्दों, पुस्तक शब्दों जेटलय में
कुछ अनन्य मिलता है। बालकथिताओं, पत्रिकायों, लघु, धारीत्री आदि के लघुनियों का
प्रयोग अनुरूप करते हैं। बच्चे प्रस्तुति से उत्पन्न निम्न रूपांतरण हैं। कल-कल-
चाल-चाल जैसे लघुत्वात्मक लघुनियों में नष्ट बच्चे मंद-सुन्दर कह जाते हैं। यदा
इससे शर्मावस हो के संदर्भों में — सार्वजनिक में समय और निर्देश का प्रोत्साहन दोनों
चाहिए, किन्तु उपदेशात्मक शैली में नहीं। अर्थात् शब्दों में ऐसी लघु, तुल्य,
सामय, धारीत्री, तरलता, लघु-धारीत्री आदि ऐसे जो कि वे लघू-संगीत के

1] Only those in whose minds and memories of their
culthood remain fresh and fair as the dawn,
can write for children, not only the memories of in-
cidents and people but those of their childhood
thoughts and emotions as well." Rabindranath
Tagore (A Centenary Volume)  

2] उत्तराधिकारी — "साहित्य कुटुंबिक साहित्यकु द्रमितालम्" प. 90
राज्य बालसाहित्य संस्था,
तामस तस्मात जीवन जैसे तल और तक्षण हो उठे। "1 ऐसे तथ्यपुक्त स्वर उस नन्दे मन्त्री के मन में आरंभ का तीव्र करता है। वास्तव में बालगौरीकार के लिए यह आयाम आहै कि इस उस प्रिय, भाव तथा प्रिय का स्पष्ट अर्थमानाती ऐसे शब्दों का संयोजन करें तो कहा प्रयोग साध्य हो और वे संभव की दृष्टि से भी ठीक हो। बच्चे शब्दों की संगीतार्थता का माराम के साक्षर का आरंभ अधिक सीमित से उत्पन्न कर लेता है। फिर वे शब्द भाव के कठिन की रूपमें न हो, वे उसका भाव पर तलाव लेते हैं। उदाहरण के लिए: 

हाय! बुध, बुध, बुध।
हाय! पुष्क, पुष्क, पुष्क।
राजा बुधे रानी हो बुधे राजकुमार।
प्राण बुधे भाव हो बुधे जीवन सब दरबार।"2 सुनिया भुक्तन बिहु।

उप: भावना के तात्विक तात्विकता यथा तैहित्य पर भी ध्यान रखना चाहिए। बालगौरिकर तल भावना का प्रयोग करे तात्विक रचना को नलिका में बालक को कोई गरीबनाई छोटू न हो। इन पद्माम में सबद्धतासम्पन्न बालगौरीकर डा. श्रीशंस निगम आ नहीं हैं। तक्षण के तात्विक वस्तु हे वस्तुर्वजनां अपेक्षा हैं, तेजस कामन की तत्त्वीक जनंत्र में मुक्ति की आया है। उप: बालगौरी के तात्विक, सिनेमा बालक अपने अवधारण की समीक्षा में हो। इत्यादि सुनिया है कि बालगौरी इत्यादि-पूर्ववर्ती शब्दों में लिखे गये हों। साधनक तो और अतीत तो वाद नहीं करते। 3 शब्दों का प्रयोग अपने नूतन अर्थ में न हो, नास्ताकार अर्था व्यंग्यार्थसृजक शब्द बच्चे समझ नहीं समझते। उप: पड़िल सांस्कृतिक पूर्वकालों और नेपाली शब्दों का प्रयोग बालकज्यामितियों में यात्रिणी नहीं है।

1 शाब्दिकता - निर्देश और मन्त्रालय - तंगाड़
2 हिन्दी शाब्दिकता - एक अध्ययन-डा. दरिकुमार देवसारे
3 भालासाहित्य संस्कृतिका अगस्त 1997

पृ. 6
पृ. 239
पृ. 11
बालकथिताओं में तुकान्त शब्दों का प्रयोग बच्चों को अति आकर्षक है। - उदा 

"फूल फूल कर 

जूंब जूंब कर . 

भींदे गाते हैं गाना 

डाल डाल पर 

पाल पाल पर 

कोकल का स्पर मस्ताना।" ७५२हेडिंजलाल दिवेदी - "तलेजीत"

रचनाकार अपनी कथिता में जिस भाषा का प्रयोग करता है उसी के अनुसार शब्दों का चयन करता है, ऐसी उसकी अपनी शैली होती है। शैली चित्र के अनुसार हो, आकर्षक तरल वर्ण बुवाएँ दी, वह अन्वयार्थ है। रचनाकार की शैली की रचना का भाषा बनता है। रामनदेश त्रिपाठी ने कहा- 'यद्यदि-शैली भाषा का अलंकार है। भाषा तरल हो, पुदूं हो, पर वर्ण शैली रोचक न हो तो बच्चों को वह प्रिय नहीं लगती।' १ सहजता एवं स्वाभाविकता शैली के अन्वयार्थ गुण दोनों वाहिदें। डॉ. मुलाम माधुर के शब्दों में - "बालसाहित्य लेखक को अपने तामाने उन भाषा-गुणों पद्यकों को रखना होगा जिनके पद्य लिख रहा है। आ: उसकी शैली चित्रनी की तरह और स्वाभाविक होगी, बालकों के लिये उसकी लचीर होगी। यदि उसके सत्ता और प्रवाहमयता विचित्रता है तो आयोपान्त वह बालकों की सचि बनाये रखने में मदद करेगी। २ आ: विज्ञ ते भी अधिक बालकथिताओं में शैली में ध्यान रखना चाहिए। यही डॉ. राज्यबंधु का कथन सामान्य लगता है - "बच्चों के कथिन को माता के समान होना चाहिए। उनकी भाषा और शैली गुद्दु एवं व्यावहारिक होनी चाहिए। गौरू लघुनियों के उदार-

1. "बालसाहित्य इक्कीसवीं सदी में", जयपुरकारा भारती पुं 76 
2. "बालसाहित्य निर्माणमें और मूल्यांकन", संपादक पुं 6 

आई. स. शैलया, सन. ती. ई. आर. टी.
व Chandigarh के लिए अत्यंत आत्मविश्वास होने के साथ साथ ग्रीत में गति और ताल
बनाये रखने में सक्षम भी है।

1.8 बालकविता के विविध तर्क एवं शिल्प विधान

बालकविताओं का भिन्न भिन्न आयारों पर विभाजन किया जा सकता है। निर्देशक देव लेखक ने बच्चों की विशेष मानसिकता एवं कल्पना शक्ति को ध्यान में रखते हुए बालगतिताओं का वार आयारों पर वर्गीकरण किया है।

1.8.1 आयु की दृष्टि से

व्यापर जैसी है कि बच्चों के बौद्धिक एवं मानसिक विकास की निरीक्षा
लीजिया-रेखा बालक बुद्धि मनोवाक्यांशको नहीं है, फिर भी बच्चों की उनकी
आयारकालिक अपने कल्पनात्मक मानसिक मानक उपलब्ध कराता आयारकालिक है।
इसलिए व्यापर जैसे अनुराग बालगतिताओं का वर्गीकरण किया जाता है।

निर्देशक जो ने 3 से 12 वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए जिसी गयी कथाओं
की बालकविताओं के अनुराग बालक बुद्धि और विशेष अवधि के जरूरी कथाओं
को पढने के कारण मानसिक शक्ति के अनुराग बालगतिताओं का अन्दर रखते है।
3 से 12 वर्ष तक की आयु के बच्चों का, उनकी मानसिक विकास, कल्पना और विश्व विचार लेखन में बनाये हुए
निर्देशक जो ने 4 वर्गों में विभाजित किया है।

1.8.2 आयु से पांच वर्ष तक की आयु के बच्चे

“Children’s Literature” - Editor Dr. George Onakoor P. 245
2.8 “बालगतिताकालिक - इतिहास एवं समग्रता” - निर्देशक देव लेखक पू. 88
2 हिंदू से तात्त्विक वर्ष तक की आयु के बच्चे
3 तत्त्व से नौ वर्ष तक की आयु के बच्चे
4 नहीं ते बारस्त वर्ष तक की आयु के बच्चे।"²

हमने पिछले अध्याय में देखा था कि शैक्षणिक बाल्य और विश्वासवादः बच्चों की लघु, दृष्टिक विकास, संकल्पनायां और भावभावनाओं में काफी परिवर्तन आता है। रामचरित मन्लेन का कथन यहाँ चिन्तनीय है — "बच्चों का अपना संसार डूबता है, उनके पिताओं, उनके भावनाओं, उनकी इच्छाओं उनका दृष्टिकोण तब मिलता है।" कौतूहल-भरी उनके दृष्टिकोण, उनके सीखने का तौर, उनका सीखने शब्द-शब्द, उनकी सीखने शब्दावलि, आदि आदि को जाने बिना उन्हें लिखे जानिए तो त्रिवित दशातित के साथ न्याय नहीं किया जा सकता। जैसे जैसे बच्चा बड़ा जाता जाता है, उसका दृष्टिकोण व्यापक होता जाता है, उसकी जानकारी बढ़ती जाती है, उसके विचार बदलते हैं। अतः यह उत्तम आयुष्य है कि लेखक हुए लिखने से पहले यह सीख लें कि यह कितने वर्ष के लिए, किस वर्ष के बच्चों के लिए लिखने जा रहा है।"²

"बालशास्त्रित्व" नामक पत्रिका में लेखक ने और एक विभाजन किया है —
1 ए: वर्ष ते वर्ष की अवस्था (पूर्ण पूर्ण की अवस्था
2 ए: वर्ष ते नौ वर्ष तक की अवस्था
3 ए: नौ वर्ष ते बारस्त वर्ष तक
4 ए: बारस्त से उपर।³

¹ बालशास्त्रित्व: इन्दिरा गांधी विश्वविद्यालय, निरीक्षक डॉ. लेकपा, पृ. 88
² 'दिनदी साहित्य': एक अविराम यात्रा - पंडित दिनदीप 'विनोद', पृ. 9
³ 'बालशास्त्रित्व': इन्दिरा गांधी राज्यविद्यालय, अवरणी, विश्वविद्यालय, पृ. 21

गानपति विकास, अप्रैल 93
यह तो वास्तव है कि हिन्दी या मलयालम में आयु के इस वर्तमान के अनुसार बद्दूत कम लोग लिखते हैं, लेकिन सफल बालगीताओं की रचना के लिए बाल-गीतकार के मन में अपने उस छोटे पाठक वर्ग की अवस्था का ध्यान रखना अनिवार्य है। अतः आयु के अनुसार बालकाव्य को शिशुकाव्य और बालकाव्य-दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

1.8.2 रस के अनुसार

कथिता का तक्ष पाठकों में अभ्यश्न शृद्धाओं में रस पैदा करना होता है।
किन्तु "बच्चों के कोमल और निर्मल सौंदर्य में फिस बात का निर्णय प्रतिष्ठित नहीं है।" यदि तब तब लेना कठिन है। निर्णय देख लेखक के मन में "बाच्चों की प्रिय लगनेवाले पाठ रस की होती है--रस्ता, धर, शान, अदुहु, और धार्मिक। दुष्कर्ष जो राजा कहलाता है, उसके लिए बालगीती तत्त्वों में कोई स्थान नहीं।" वास्तव में, बच्चों को लब्ध प्रिय लगनेवाला रस शास्त्री रस है,क्योंकि शास्त्री रस से उनका भारतीय गतिविधियों होता है। वायु-करोशी की भावना रखनेवाले बच्चों को धर रस भी भतन्द है उनके अदुहु और शान्तों रस से बच्चों का ताजांतरम प्राप्त होता है, जैसे, धार्मिक रस उन्हें अदुहु दिया है तथा धार्मिक रस से उनके कुछ भी लेना देना नहीं है।

इस संबंध में मलयालम के प्रसिद्ध लेखक प्रोफ। गुप्तजन नाथर का अभिनव है-
"उध्य कोटि की तत्त्वों में कृतियाँ" बालकों की सुगंध कराती हैं, इसका आधार-शास्त्रों करण उन कृतियों में व्याप्त अदुहु रस का भाषण करता है। भारत के ग्रस्त-

1. बालगीति तत्त्वों - इतिहास चार्य श्रीकृष्ण-निर्णय देव लेखक पृ. 89
2. यहीं पूँछ
3. हिन्दी बालप्रकाशिता -उद्भव और विकास -डा. सुरेंद्र चिकम पृ. 22
रतनें में विषय का उचित स्थान हैं। 1 प्रियविद्या की कीमत शिक्षा तथा साहित्य हैं।

1.8.3 शिक्षा की लृक्षित से बालगिताओं का यथार्थकरण

शिक्षा की लृक्षित से भी बालगिताओं का यथार्थकरण किया जा सकता है।

बच्चों के अनुभव ज्ञान बाहुल्य ही स्थितित है, इसलिए उनके लिए अपरिचित विश्वास पर बालगित लिखना निरर्थक है। अत: उनके लिए परिचित विषयों को चुनकर ही बालगित लिखा जा सकता है। बच्चों के बाल अनुभव के साथ अनुभववादी वस्तुओं से भी विश्वास, जीवन-जन्तु और पायू-पृथिवी से संबन्धित, पेड-पौधे और फल-फूल से संबंधित, आकाश-चाहूँ-तारे से संबंधित, ब्रह्मांड तथा दृष्टिकोण से संबंधित आदि अनेक विषय आते हैं।

1.8.4 शिक्षा की लृक्षित से

निरकार देव जी ने शिक्षा की लृक्षित से बालगिताओं का यथार्थकरण किया है।

बच्चों की अनुभवानुष्ठान देने के साथ तारख उन्हें परीक्षा सम्मेलन में शिक्षा की देना बालगिताओं का नक्श है। सेवा जी ने शिक्षा की लृक्षित से बालगिताओं का निम्न लिखित विश्वास किया है --

1. उपलब्ध कुलना को विकसित करनेवाले बालगित
2. सद्भावनाओं को विकसित करनेवाले बालगित
3. नानीधारियों को परिपूर्वत करनेवाले बालगित
4. ज्ञानधार बननेवाले बालगित
5. प्रेम दायक बालगित

1 शब्दांशित्य - तत्पश्चात इंतिजाम एवं रेस्टोर शब्दांशित्य इंस्ट्रॉक्चर पृ. 49
2 निरकार देव तेराक - "बालगित साहित्य इंस्ट्रॉक्चर एवं सारीशा" पृ. 94-97
उपर भी हुए सभी पुकार के बालगीत कितनी न कितनी पुकार बच्चों के
सर्वार्थीय विकास में सदृशक हें। बालसाहित्य के प्रसिद्ध लेखक एक्स्ट्रू राजराज-
प्रमाण ने कहा है -- "बच्चों को शाित करना, उत्तरी अद्वैत कल्याण-शक्ति को दीपक
cरक्रा, चित्ता शक्ति का विकास कराना आदि नसरी साहित्य का लक्ष्य है।
माँ के हृद के साथ व दादी की धारी द्वारा निले परम्परागत साहित्य हैं, अथवा
आधुनिक युग में बच्चों के लिए रचित साहित्य हैं, इन सबका लक्ष्य शिष्य का सर्वत्र-
मुख साहित्य है।" ⁴

1.8.5 विल्पविधान की जटिलता

विल्पविधान की जटिलता भी बालगीतों के विभिन्न खण्डों में वर्गीकृत किया
हो सकता है——

1. लोरियाँ और प्रभाविता
2. शिशुगति
3. नान्दनं भद या अंदवंद गीत
4. धिनतियाँ
5. कदाचितका
6. प्रथम गीत
7. प्रगति ²

बच्चों का "साहित्यिक संकाय" लोरियाँ और शिशु गीतों से टोला है। बाद
में यह दूसरी विधाओं में भी रुचि लेने लगता है। लिखित और अलिखित कविताओं
के आधार पर तथा कविताओं के साथ बच्चों के प्रथम परिचय के विकास-वृक्ष के आधार
पर भी बालगीतों का हर विकास किया गया है।

1. स्टेट बालसाहित्य इंस्टीट्यूट-बालसाहित्य तत्कालीन इतिहास, पृ. 109
2. बालसाहित्य -इन्दिरा गांधी राष्ट्रीयमुक्त विश्वविद्यालय

गांधीजी की पढ़ाई सी अप्रैल 93

पृ. 68
बालस्वास्थ्य सम्बन्धी

लोकगीत

पालने के लिए विद्यालय-कृष्ण

ध्वार-ध्वारी बच्चों की बार-बार सुनायी/पढ़ी

जानेवाली कथिताएं

केवलमात्र दो वर्ष

की आयु तक के बालकों के लिए

परा स्पष्ट गीत।

ये भी बच्चो द्वारा सुनायी/पढ़ी जानेवाली कथिताएं।

खर-खर सितारों के युक्त कथिताएं की बार-बार सुनायी।

ध्वार-ध्वारी कथिताएं।

या है Action Songs

ध्वार-ध्वारी सुनायी।

अपनी तक तक के बालकों के लिए।

"बालसाहित्य" - इन्दिरागांधी राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय, मानविकी विभाग में 1993 में
लिखित बालकथिताओं का पत्रिका व्यक्ति कर्त्ता है, इसका संशोधन विचारण इस आरेख से उम्मीद मिल जाता है।

निष्कर्ष:

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बालमनोविज्ञान के अनुसार बाल की बालकथित्व-अध्ययन बाल-पृष्ठ के बालकों के लिए लिखने का उद्देश्य होता है। इस अध्ययन के अनुसार बालकों की उपस्थिति और भाषा स्तर का उपयुक्त सामान्य भाषा-स्तर का भी यथार्थ प्राप्त रूप कर दिए, तो उसकी रचना की सफलता अतंतरित है।

1. J.S. Sharma (Editor) "Children's Literature- Preparation and Evaluation"   Page. 29